أَلَمۡ تَرَ إِلَى ٱلَّذِينَ أُوتُواْ نَصِيبٗا مِّنَ ٱلۡكِتَٰبِ يُؤۡمِنُونَ
بِٱلۡجِبۡتِ وَٱلطَّٰغُوتِ وَيَقُولُونَ لِلَّذِينَ كَفَرُواْ هَٰٓؤُلَآءِ أَهۡدَىٰ
مِنَ ٱلَّذِينَ ءَامَنُواْ سَبِيلًا ﴿٥١﴾ أُوْلَٰٓئِكَ ٱلَّذِينَ لَعَنَهُمُ ٱللَّهُۖ وَمَن
يَلۡعَنِ ٱللَّهُ فَلَن تَجِدَ لَهُۥ نَصِيرًا ﴿٥٢﴾ أَمۡ لَهُمۡ نَصِيبٞ مِّنَ
ٱلۡمُلۡكِ فَإِذٗا لَّا يُؤۡتُونَ ٱلنَّاسَ نَقِيرًا ﴿٥٣﴾ أَمۡ يَحۡسُدُونَ ٱلنَّاسَ
عَلَىٰ مَآ ءَاتَىٰهُمُ ٱللَّهُ مِن فَضۡلِهِۦۖ فَقَدۡ ءَاتَيۡنَآ ءَالَ إِبۡرَٰهِيمَ
ٱلۡكِتَٰبَ وَٱلۡحِكۡمَةَ وَءَاتَيۡنَٰهُم مُّلۡكًا عَظِيمٗا ﴿٥٤﴾ فَمِنۡهُم مَّنۡ
ءَامَنَ بِهِۦ وَمِنۡهُم مَّن صَدَّ عَنۡهُۚ وَكَفَىٰ بِجَهَنَّمَ سَعِيرًا ﴿٥٥﴾ إِنَّ
ٱلَّذِينَ كَفَرُواْ بِـَٔايَٰتِنَا سَوۡفَ نُصۡلِيهِمۡ نَارٗا كُلَّمَا نَضِجَتۡ
جُلُودُهُم بَدَّلۡنَٰهُمۡ جُلُودًا غَيۡرَهَا لِيَذُوقُواْ ٱلۡعَذَابَۗ إِنَّ ٱللَّهَ
كَانَ عَزِيزًا حَكِيمٗا ﴿٥٦﴾ وَٱلَّذِينَ ءَامَنُواْ وَعَمِلُواْ ٱلصَّٰلِحَٰتِ
سَنُدۡخِلُهُمۡ جَنَّٰتٖ تَجۡرِي مِن تَحۡتِهَا ٱلۡأَنۡهَٰرُ خَٰلِدِينَ فِيهَآ
أَبَدٗاۖ لَّهُمۡ فِيهَآ أَزۡوَٰجٞ مُّطَهَّرَةٞۖ وَنُدۡخِلُهُمۡ ظِلّٗا ظَلِيلًا ﴿٥٧﴾
* إِنَّ ٱللَّهَ يَأۡمُرُكُمۡ أَن تُؤَدُّواْ ٱلۡأَمَٰنَٰتِ إِلَىٰٓ أَهۡلِهَا وَإِذَا
حَكَمۡتُم بَيۡنَ ٱلنَّاسِ أَن تَحۡكُمُواْ بِٱلۡعَدۡلِۚ إِنَّ ٱللَّهَ نِعِمَّا
يَعِظُكُم بِهِۦٓۗ إِنَّ ٱللَّهَ كَانَ سَمِيعَۢا بَصِيرٗا ﴿٥٨﴾ يَٰٓأَيُّهَا ٱلَّذِينَ
ءَامَنُوٓاْ أَطِيعُواْ ٱللَّهَ وَأَطِيعُواْ ٱلرَّسُولَ وَأُوْلِي ٱلۡأَمۡرِ مِنكُمۡۖ
فَإِن تَنَٰزَعۡتُمۡ فِي شَيۡءٖ فَرُدُّوهُ إِلَى ٱللَّهِ وَٱلرَّسُولِ إِن كُنتُمۡ
تُؤۡمِنُونَ بِٱللَّهِ وَٱلۡيَوۡمِ ٱلۡأٓخِرِۚ ذَٰلِكَ خَيۡرٞ وَأَحۡسَنُ تَأۡوِيلًا ﴿٥٩﴾

Theme	
People of the Book tend to take side of Shaitan. Fate of the unbelievers and the believers. Who should the believers obey?	अहल-ए-किताब का शैतान की हिमायत की तरफ़ मैलान। काफ़िरों और ईमान वालों का अंजाम। ईमान वालों को किसकी इताअत करनी चाहिए?
Tarjumani	
Have you not seen those who were given a portion of the Book? They believe in superstition and Taghoot (forces of Shaitan) and say about the unbelievers that they are better guided to the Right Way than the believers! are the ones whom Allah has cursed, and the one who is cursed by Allah can find no helper. they have a share in the kingdom? If they had any share they would have not given other people equal to a speck on a date-stone. Or do they envy other people because Allah has given them from His grace? If so, let them know that We did give the Book and Wisdom to the descendants of Ibraheem (Abraham), and blessed them with a great kingdom. But some of them believed in it and some turned away. Sufficient is hell to burn those who turned away. Those who rejected Our revelations will soon be thrown into the Fire. No sooner will their skins be burnt off than We shall replace their skins, so that they may taste the real torment. Surely, Allah	क्या तुमने उन लोगों को नहीं देखा जिन्हें किताब के इल्म में से कुछ हिस्सा दिया गया है और उनका हाल यह है कि जिब्त और तागूत को मानते हैं और काफ़िरों के मुताल्लिक कहते हैं कि ईमान लानेवालों से तो यही ज़्यादा सही रास्ते पर हैं	ऐसी ही लोग हैं जिनपर अल्लाह ने लानत की है, और जिसपर अल्लाह लानत कर दे, फिर तुम उसका कोई मददगार नहीं पाओगे	क्या हुकूमत में उनका कोई हिस्सा है? अगर ऐसा होता तो ये दूसरों को एक फूटी कौड़ी तक न देते	फिर क्या ये दूसरों से इसलिए हसद कहते हैं कि अल्लाह ने उन्हें अपने फज्ल से नवाज़ दिया? अगर यह बात है तो इन्हें मालूम हो कि हमने तो इबराहीम की औलाद को किताब और हिकमत अता की और मुल्के-अज़ीम बख्श दिया, मगर उनमें से कोई उसपर ईमान लाया और कोई उससे मुँह मोड़ गया, और मुँह मोड़नेवालों के लिए तो बस जहन्नम की भड़कती हुई आग ही काफ़ी है	जिन लोगों ने हमारी आयात को मानने से इनकार कर दिया है उन्हें बिलयकीन हम आग में झोंकेंगे और जब उनके बदन की खाल गल जाएगी तो उसकी जगह दूसरी खाल पैदा कर देंगे ताकि वे ख़ूब अज़ाब का मज़ा चखें, अल्लाह बड़ी क़ुदरत

is Mighty, Wise. 61 As for those who believe and do righteous deeds, We shall admit them to gardens beneath which rivers flow wherein they will live for ever. Therein, they will have chaste spouses, and We shall provide them with cool thick shade 15 Allah commands you to give back the trusts to their rightful owners, and when you judge between people, judge with fairness. Surely, excellent is the counsel which Allah gives you. Indeed, Allah is ever All-Hearer, All-Seer. O believers! Obey Allah, obey the Rasool and those charged with authority among you. Should you have a dispute in anything refer it to Allah and His Rasool, if you truly believe in Allah and the Last Day. This course of action will be better and more suitable.	रखता है, अपने फैसलों को अमल में लाने की हिकमत ख़ूब जानता है	और जिन लोगों ने हमारी आयात को मान लिया और नेक अमल किए उनको हम ऐसे बाग़ों में दाख़िल करेंगे जिनके नीचे नहरें बहती होंगी, जहाँ वे हमेशा-हमेशा रहेंगे और इनको पाकीज़ा बीवियाँ मिलेंगी और उन्हें हम घनी छाँव में रखेंगे	मुसलमानो, अल्लाह तुम्हें हुक्म देता है कि अमानतें अहले-अमानत के सुपुर्द करो, और जब लोगों के दरमियान फ़ैसला करो तो अद्ल के साथ करो, अल्लाह तुमको निहायत उमदा नसीहत करता है और यकीनन अल्लाह सब कुछ सुनता और देखता है	ऐ लोगो जो ईमान लाए हो, इताअत करो अल्लाह की और इताअत करो रसूल की और उन लोगों की जो तुममें से साहिबे-अम्र हों, फिर अगर तुम्हारे दरमियान किसी मामले में निज़ाअ हो जाए तो उसे अल्लाह और रसूल की तरफ़ फेर दो अगर तुम वाकई अल्लाह और रोज़े-आख़िर पर ईमान रखते हो	यही एक सही तरीक़े-कार है और अंजाम के एतिबार से भी बेहतर है	
Tafsir	